तमसः सांप्रदायिकता का आख्यान

प्रो. दिनेश कुमार चौबे
पूर्वोत्तर पर्वतीय विवि
शिलांग, मेघालय
मो 9436312134

साहित्य मानव की विकासशील प्रवृत्ति के मार्मिक अंगों की अभिव्यक्ति है, जिसमें किसी भी जाति समाज या राष्ट्र की चित्तवृत्ति का प्रतिबिंब होता है। साहित्य का समाज से अंतर्संबंध है। समाज का हर प्रवाह साहित्य में संकलित होता रहता है, उसकी प्रत्येक क्रिया साहित्य में दर्ज होती रहती है। उपन्यास विविधता पूर्ण मानव जीवन की रसात्मक अभिव्यक्ति है। उपन्यासकार अपने वैचारिक परिवेश की प्रयोगशाला में मानव जीवन से अन्यान्य स्तरों की घटनाओं का निरीक्षण करता है तथा तथ्यों एवं सत्यों को खोजकर उन्हें व्यक्त करता है। उपन्यास को एक विशिष्ट आकार प्रदान करने में कथानक का चयन एवं उसका व्यवस्थित कलापूर्ण प्रस्तुतिकरण ही लेखक की प्रतिभा और महानता के मानदंड हैं।

मुख्य एवं अकेला कथानक ही अपने आप में इतना मर्यादित और सुगठित, पूर्ण गति युक्त मौलिक प्रभावपूर्ण एवं अविराम होना चाहिए कि पाठक को किसी अन्य कोण की ओर दृष्टि न दौड़ानी पड़े। तमस भीष्म साहनी जी का अत्यंत सधा हुआ सारयुक्त और व्यापक कथानक से युक्त उपन्यास है। इसमें सामाजिक धार्मिक तनाव के परिप्रेक्ष्य में उस आदिम पशुत्व की भावना को अत्यंत सशक्त एवं घटना प्रधान ढंग से उभारा गया है जिसके चलते हमारा समाज समाज न रहकर फिरकों और व्यक्तियों में बंटा है। विवेच्य उपन्यास में चूंकि किसी व्यक्तिगत बखान का प्रतिबिंबन नहीं किया गया है। अस्तु संपूर्ण समाज का चित्रण होने का भाव है। इसमें समाज की विविधता के अनुरूप कथा प्रसंगों में भी विविधता परिलक्षित होती है। यह विविधता विभिन्न प्रकार की मनः स्थितियों के अनुरूप है क्योंकि समाज में प्रत्येक की मनः स्थिति प्रतिकूल होती है फिर भी इस विविधता के पीछे एक वैचारिक प्रवाह है। मानव मन की आशाओं, आकांक्षाओं, विद्रोह, कुंठा, उत्पीड़न, विडंबना और बर्बर पशुत्व का वर्णन कर उन ज्वलंत समस्याओं से उसे परिचित कराना जिनके अस्तित्व ने हमारे देश को न केवल भौगोलिक दृष्टि से बांटा वरन मानव समुदाय के मन भी बाँट दिए। तमस में पंजाब का एक अंचल विशेष सर्जना की पृष्ठभूमि में आता है तथापि इसमें युग सत्य को रूपायित किया गया है, जिसने भारत की आत्मा को घुन की तरह खाकर-चाटकर इतना खोखला कर दिया कि विभाजन का मुंह देखना पड़ा। विभाजन का यह कहर लगातार हमें छीज रहा है। कदाचित इसी लिए तमस की प्रासंगिकता गत सदी के सातवें-आठवें दशक की अपेक्षा अधिक हो गयी है।

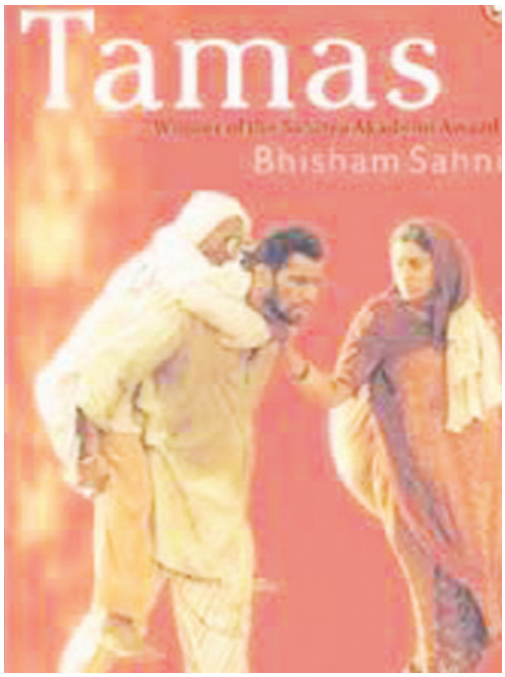

तमस अर्थात एक ऐसा गहन अंधकार जिसमें समाज की सारी प्रकाशवान सत्ताएं तिरोहित हो गयी हैं। एक राष्ट्र के नागरिक होते हुए हम विभिन्न धर्मों में बंटे होने के कारण सांप्रदायिकताओं को प्रश्रय देते हैं। यही संप्रदायी सोच न जाने कितने प्राणों को मृत्यु के मुख